फुल स्टॉप - 41

अव्यक्त बापदादा :- (19.11.1984)

➳ _ ➳ तीसरे थे - हलचल को देख अचल रहने वाले। सेवा के श्रेष्ठ संकल्प में सेवा के भिन्न-भिन्न प्लैन सोचना और करना। सारी विश्व को शान्ति और शक्ति की सहायता देने वाले, साहस रखने वाले। औरों को भी हिम्मत दिलाने वाले। ऐसे भी बच्चे देखे। लेकिन शमशानी उमंग उत्साह वा शमशानी तीव्र पुरूषार्थ वा कमजोरियों से वैराग वृत्ति, इसी लहर में नहीं चलना। सदा परिस्थिति को स्व स्थिति की शक्ति से परिवर्तन करने वाले, विश्व-परिवर्तक स्मृति में रहो।

➳ _ ➳ परिस्थिति स्थिति को आगे बढ़ावे वा वायुमण्डल मास्टर सर्वशक्तिवान को चलावे। मनुष्य आत्माओं का शमशानी वैराग, अल्पकाल के लिए बेहद का वैरागी बनावे यह पूर्वज आत्माओं का कर्म नहीं। समय रचना, मास्टर रचता को आगे बढ़ावे यह मास्टर रचता की कमज़ोरी है। आपके श्रेष्ठ संकल्प - समय को परिवर्तन करने वाले हैं। समय आप विश्व-परिवर्तक आत्माओं का सहयोगी है। समझा! समय को देखकर, समय के हिलाने से आगे बढ़ने वाले नहीं। लेकिन स्वयं आगे बढ़ समय को समीप लाओ। क्वेश्चन भी बहुतों का उठता कि अब क्या होगा? लेकिन क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करो। अर्थात् अपने को सभी सब्जेक्ट में फुल करो। यह है 'फुलस्टाप'।

➳ _ ➳ ऐसे समय पर क्या होगा? यह क्वेश्चन नहीं उठता लेकिन क्या करना है, मेरा कर्तव्य ऐसे समय पर क्या है, उस सेवा में लग जाओ। जैसे आग बुझाने वाले आग को बुझाने में लग गए। क्वेश्चन नहीं किया कि यह क्या हुआ। अपनी सेवा में लग गये ना। ऐसे रूहानी सेवाधारी का कर्तव्य है अपनी रूहानी सेवा में लग जाना। दुनिया वालों को भी न्यारापन अनुभव हो। समझा! फिर भी समय प्रमाण पहुंच तो गए हो ना।

➳ _ ➳ परिस्थिति क्या भी हो लेकिन ड्रामा ने फिर भी मिलन मेला मना लिया। और ही लकी हो गये ना जो पहुंच तो गये हो ना। खुश हो रहे हो ना कि हमारा भाग्य है जो पहुंच गए। भले आये। मधुबन की रौनक आप सब बच्चे हैं। मधुबन का श्रृंगार मधुबन में पहुंचा। सिर्फ मधुबन वाले बाबा नहीं, मधुबन वाले बच्चे भी हैं।

➢➢ सेवा के कौन से प्लान सोचना और सेवा करना...

➳ _ ➳ युक्ति से समझाना

➢➢ श्मशानी वैराग नहीं, निरंतर, शाश्वत वैराग हो...

➳ _ ➳ तीन प्रकार के वैराग हैं...

→ मंद वैराग

→ मध्यम वैराग

→ तीव्र वैराग

- परा वैराग
  - थोडा बहुत वैराग
- अपरा वैराग
  - वासनाये सम्पूर्ण समाप्त

➢➢ सतत, निरंतर वैराग चाहिए...

➳_ ➳ वैराग चित्त की अवस्था है...

→ कुछ छोड़ने का नाम वैराग नहीं है...

- भोजन, चीजे छोड़ना त्याग, वैराग नहीं है...
  - राग और वैराग दोनों ही बंधन है...
  - वैराग आनन्द की अवस्था है...

➢➢ त्याग, वैराग बहुत सूक्ष्म है...

➳_ ➳ ये वह अवस्था है, जिसमे वस्तुएं व्यर्थ हो गयी हैं...

→ वास्तविक वैराग कैसे लाये?

- विवेक से
  - संसार की सब वस्तुए अनित्य हैं...
  - जबरदस्ती वैराग नहीं लाना
  - विवेक युक्त वैराग न होने से कुछ समय बाद फिर से आसक्ति आ सकती है...
- उसके नुक्सान का गहराई से चिंतन...
  - कई बार विशेष सम्बन्ध ही बंधन बन जाता है...
- प्राप्ति, बड़े की तलाश
  - **प्राप्तियो से खुद को भरना**
  - **श्रेष्ठ संकल्पों से खुद को भरना**
- समय की पहचान
  - अभी नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे...
  - मन से छोड़ना है...
  - मन से, वस्तुओं के प्रति आसक्ति को छोड़ना है...
- अपने कर्तव्य की स्मृति
  - निरंतर अपना कर्तव्य याद रहे...
- दोष दृष्टि
  - संसार के भोगों में दोष दृष्टि
  - संसार के सुखों में दोष दृष्टि
  - संसार की आसक्तियों में दोष दृष्टि

■ मुरली से ऐसे महावाक्यो का चिन्तन, जिनसे वैराग आये...

▶ जैसे मुरली में आता है संसार कुम्भी पाक नर्क है...

▶ ये संसार छी छी दुनिया है...

▶ विषय वैतरणी नदी है...

▶ खरी चैनल है...

▶ इस शरीर में कीड़े पड़े हुए हैं... इससे क्या प्यार करते हो...

▶ ये दुनिया कब्रिस्तान है...

▶ सब मरे पड़े हैं...

▶ सब चलती फिरती लाशें हैं...

▶ ऐसे संसार के लिए घृणा भाव लाना...

■ जो कुछ दिख रहा है, सब नष्ट हो जाना है

▶ मौत सामने खड़ा है

▶ मौत का बाजार गर्म होना है...

▶ अब के तुम्हारे दुःख तो कुछ नहीं हैं, संसार में दुःख के पहाड़ टूटने हैं...

▶ मच्छरों मिसल सब नष्ट हो जाने हैं...

▶ ये दुनिया कब्र दाखिल है...

▶ यहाँ कोई किसी का नहीं है...

▶ यहाँ दुःख ही दुःख है..

▶ किसी का भरोसा नहीं है यहाँ...

■ वैरागी आत्माओं का संग

▶ भोगियों के संग से भोग के संस्कार बहुत जल्दी आ जाते हैं...

■ ससार का दर्शन करना

▶ जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि में दुःख कितना है...

▶ होस्पिटल में जनरल वार्ड में देखना कितना दुःख है...

▶ जर्जर होते वृद्ध शरीर को देखना

▶ वृद्धाश्रम में माता पिता को देखना

▶ ऐसे संसार को देखेंगे तो वैराग आएगा...